कथा-साहित्य मे एक चित्र है माध्यम है। हमारी नृसंता का हमारे असत्य मुखैटो और घृणित कर्मो का उनमे आक्रोश नही एक पैनापण है, परिवर्तन की एक अकुलाहट है, विसंगतियों पर प्रहार करने की बेबसी है, सामाजिक सोद्देश्यता सुधाजी मे सूक्ष्म से सूक्ष्मत्तर हुई है।"[५] एक लडकी जो अपने १८-२० साल तक अपने मायके मे बहरती है उस पौधे (लडकी) को उखाडकर दूसरे आँगन मे रोया जाता है वह नई जगह पर उसे पनपने और बहरने मे कितनी तकलीफों का सामना करना पडता है यह हमे 'रहोगी तुम वही' कहानी में दिखाई देता है। नई जगह पर वह अपने आप को अपने पति के अनुसार ढालती है। फिर भी उसका पति सुन्तुष्ट नही है। अपने आप को पुरी तरह से बदलने के बावजूद उसे बार-बार उलाहना दिया जाता है कि वह अपने पति के काबिल नही है उसे हमेशा तिरस्कार युक्त शब्द सुनने को मिलता है कि 'रहोगी तुम वही' और यदी वह अपने पति के विरुध्द बग़ावत करती है, उसके कहे नुसार नहीं रहती है, उसका विरोध करती है तो फिर वह उस जगह से भी उखाडकर अर्थात तलाक दे कर पुरानी जगह फेंक दी जाती है। अपनी पुरानी जगह (मायका) आने पर उसे वहा अपनी जगह कही दिखाई नहीं देती। वहाँ फिर से उसे संघर्ष करना पडता है।

मानसिक यातना या इमोशनल अब्यूज से गुजरती स्त्री के बारे में सब जानते है, अक्सर एक स्त्री को उसके किए किसी काम को शाबासी मिलना तो दूर की बात उसे बात-बेबात हर चीज पर उलाहने दिये जाते है, उसे बाल्बाण बरसाए जाते है। "सुधा अरोडा जी की कहानियाँ एक ऐसे आकल व्यक्तित्व की खोज है जो अपने ही दायरे मे छटपटा रहा है, कमजोर है, पर सशक्त बनकर मुक्ति भी पाना चाहता है।"६ सुधा अरोडाजी, कम लिखती है मगर जब लिखती है तब ऐसा लिखती है कि पाठक मानस में उसकी छवि देर तक बनी रहती है और दिल की गहराहयों तक पहुँचती है वे वर्जनाओं से परे सीधा और सच्चा लेखन करती है।

संदर्भ :-

१. रहोगी तुम वही - सुधा अरोडा, पृ. क्र. ९९

२. वही पृ. क्र. ९९

३. हिन्दी कहानी उद्‌भव और विकास - डॉ. सुरेश सिन्हा, पृ. क्र. ६१२

४. 'रहोगी तुम वही' का से एक अंश

५. हिंदी कहानी उद्‌भव और विकास - डॉ. सुरेश सिन्हा पृ. क्र. ६१८

६. अस्तित्ववाद और नई कहानी लेखक- लालचंद गुप्त मंगल, पृ. क्र. २१८

75

प्रशासकीय राजनीति में. व्याप्त भ्रष्टाचार का यथार्थ परक - जिवंत चित्रण

(गलियारे के विशेष संदर्भ मे)

डॉ. अनिता पोपटराव नेरे
शोध निर्देशिका ,
एम.एस.जी. महाविद्यालय मालेगाव कॅम्प

अनिता रोहिदास राजबंसी
शोध छात्रा,
स्व.आर.डी. देवरे कला व विज्ञान महाविद्यालय, म्हसदी

****

प्रस्तावना :-

साहित्य और राजनीति का अनन्य साधारण संबंध है। आज साहित्य और राजनीति एक-दुसरे के प्रेरक बन गये है। दोनो एक-दुसरे से प्रभावित है। राजनीति प्रत्येक युग के हर भाषा के साहित्य मे विभिन्न रुप में विद्यमान है। जहाँ तक उपन्यास विद्या का प्रश्न है वह तो व्यक्ति के राजनीतिक जीवन व्यापार से इस तरह एकाकार हो गयी है, कि उसे साहित्य से अलग नही किया जा सकता। वास्तविकता यह है कि हमारे जीवन में धर्म और दर्शन भी राजनीति का आवरण ओढकर उपस्थित होते है, इस दृष्टि से उपन्यास हमारे जीवन के अधिक निकट है। राजनीति और साहित्य का संबंध स्पष्ट करते हुए प्रसिध्द विचारक सुषमा शर्मा कहती है, च्व्यक्ति , समाज और राजनीति एक दुसरे से अविछिन्न रुंप से अनुस्थिति है। राजनीति समाज की दिशा निर्धारित करती है और समाज राजनीति की इस भांति दोनों ही एक-दुसरे से प्राण-रस ग्रहण करते हैछ[२] जिस राजनीतिक मूल्यों को लेकर राष्ट्र का ढाँचा तैयार किया जात है। उसी के अनुरुप उस देश में मानव प्रतिमा निर्मित होती है। आज व्यक्ति और समाज हर क्षण राजनीति में ही जीता है। जो राजनीति राजा एवं राजदरबारियों के दायरे में आबध्द थी वह एक नये आलोक में आकर प्रजा की सम्पत्ति बन गई है। आज हम देखते है की मनुष्यों द्वारा निर्मित व्यवस्था को सरकार कहलाती है। शासन व्यवस्था व्यक्तियों द्वारा ही निर्मित होती है। और उसे चलाने वाले भी व्यक्ति होते है। व्यक्तियों द्वारा संचालित

Scanned with CamScanner

इस व्यवस्था को ही राजनीति कहा जाता है| प्रत्येक समाज की व्यवस्था वहाँ की राजनीति के स्वरुप का निर्धारण करती है| अत: युगीन राजनीति तद्युगिन समाजिक एवं आर्थिक पहलूओं का प्रतिनिधीत्व करता है|

स्वतंत्रता के पश्चात राजनीतिक घटनाओ ने भारत के जन-जीवन को विशिष्ट रुप से आंदोलित एवं आलोडित किया है| यहाँ की राजनीति ने मनुष्य के अस्तित्व को हिला कर रख दिया है| तीव्र गति से परिवर्तित सरकार एवं राजनीतिक परिस्थितियों ने मनुष्य के स्वतंत्र व्यक्तित्व की पुर्णत: प्रभावित किया है| स्वतंत्रता के पश्चात भारत में जो शासन व्यवस्था अस्तित्व मे आई उसमें राजनीतिज्ञो ने अपने संकुचित स्वार्थो के कारण जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड किया| इससे साधारण जन-जीवन शोचनीय हो गया| बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, भाई- भतीजावाद अस्तित्व में आया| वस्तुत: राजनीति एक ऐसी व्यवस्था है| जो शासन व्यवस्था एवं मनुष्य के बीच समानता स्थापित करती है| परंतू आज की परिस्थिती भिन्न है| आज की शासन व्यवस्था से जनता का सीधा संबंध नही रह गया है| सरकार तुरंत बदलने लगी है| आपसी गुटबंदी एवं आर्थिक लाभों के कारण नेताओं में स्वार्थ की भावना ने घर कर लिया|

आज की भारतीय राजनीति चाहे यह किसी भी क्षेत्र में हो शिक्षा क्षेत्र, न्यायक्षेत्र, प्रशासन आदि स्थानो की राजनीति में कोई नैतिक मानदंड नही रह गया है| राजनीति में स्वार्थ की भावना बलवंत होती है, जिसके फलीभूत आज देश की, राजनीति एक बार फिर सत्ता स्वार्थ की अंधेरी बंद गली में रास्ता भटक गई है ... पद, प्रतिष्ठा, कुर्सी ओहदे की बोलियाँ लग रही है| इस समस्या का प्रभाव समाज व देश पर पड रहा है|छ [२] नैतिक बल का ज्हास , चारित्रिक दृढता मे ज्हास कर्तव्यपरायणता में वृध्दि, दलबदलू कूटनीति वातावरण में पल रहा है| प्रजातंत्रीय व्यवस्था में अन्य सभी घटकों से नौकरशाह पर अधिक जिम्मेदारी होती है| वह प्रजातंत्रीय शासनव्यवस्था की रीढ की हड्डी है| प्रशासकीय कर्मचारी अगर प्रामाणिकता से अपना कर्म करे तो देश का विकास उसके के हाथ मे है| आज देश की पूरी सत्ता अधिकारीयों के हाथ में आ गयी है| इस कारण वे मनमानी करने लगे है| वर्तमान राजनीति प्रशासकीय अधिकारीयों के हाथों की कठपुतली मात्र बनकर रह गयी है| वर्तमान प्रशासकीय शासन व्यवस्था में हम देखते है की, जो प्रशासकीय अधिकारी अधिक भ्रष्टाचारी है, राजनेताओं के हा मे हा मिलाता है, वही तरक्की पाने के अधिकारी बन जाता है| प्रामाणिक अधिकारीयो के प्रतिवेदन खराब करके उनका प्रमोशन रुकवा दिया जाता है| वर्तमान कालीन भारतीय शासन व्यवस्था मे मात्र रिश्वतखोर भ्रष्टाचारी, चापलूस अप्रामाणिक और नीतिभ्रष्ट नौकर शाह तो है ही पर कुछ प्रामाणिक ईमानदार ही है, जिनके सहारे आज देश का विकास दिखायी देता है| वह इन इने-गिने प्रामाणिक अधिकारीयों के कारण ही| इन प्रामाणिक अधिकारी को सत्य के मार्ग पर चलते समय अनेक मुसीबतों और कठिनाइयों का सामना करना पडता है| बार-बार उनके प्रमोशन रुकवाये जाते है| उन पर झुठे मुकदमे दायर किये जाते है| उनके प्रतिवेदन खराब किए जाते है| बार-बार उनका तबादला किया जाता है| राजनेता तथा भ्रष्ट नोकरशाह प्रामाणिक अधिकारीयो को भ्रष्टता के मार्ग पर लाने का बार-बार प्रयास करते है|

विषय प्रवेश :-

समकालीन हिंदी उपन्यासकारों ने अपने राजनीतिक उपन्यासों में वर्तमान भ्रष्ट प्रशासन तंत्र का पर्दाफाश किया है| ऐसा ही कुशलता पुर्ण प्रयास समकालीन हिंदी उपन्यास का कथाकार रुपसिंह चंदेल जी ने किया है| अभी हाल ही में उनका आठवाँ उपन्यास चलियारेछ प्रकाशित हुआ है| उन्होंने अबतक अलग-अलग विषयों को लेकर रचनाएँ कि है| उनकी खासियत ही है की, उनके हर-ऐक उपन्यास में विषय वैविध्य पाया जाता है| चरुकेगा नही सवेराछ, चमला बहूछ, च्पाथरटीलाछ, च्शहर गवा हैछ, च्खुदीरामबोसछ, च्गुलाम बादशाहछ, च्नटसारछ, च्करतारसिंहछ च्सराभाछ , चालियारेछ, च्दंगलछ, आदि औपन्यासिक कृतिया है| अपने कथानक गलियारे उपनयास उनके पिछले उपन्यास च्गुलाम बादशाहछ की ही भाँति भारतीय ब्युरो क्रेसी के विद्रुप चेहरे को बेनकाब करता है| कितू यह चेहरा च्गुलाब बादशाहछ से भिन्न है| चालियारेछ उपन्यास मे भारत सरकार के अधिन एक ऐसे ही विभाग प्रति रक्षा वित्त विभाग (प्ररवि) के माध्यम से लेखक ने सत्ता और शक्ति का खुलकर उपभोग करते भ्रष्ट ब्युरो क्रेट्स की कार गुजारियों को अपने लक्ष्य के अधीन रखा है| उसका कथानक विशेषरुप से अपसरशाही भ्रश्टाचार के तमाम पहलूओं पर विचार करता है| अपसाही के विभिन्न पहलूओं पर प्रकाश डालती है| जिज्ञासा महत्वकांक्षा प्रशासन के विभिन्न पदोपर आसीन ब्युरोक्रेटस स्थितियो के अनुसार अपने स्वार्थहित के लिए सरकारी सुविधाओं का अनुचित प्रयोग, उच्च और निम्न वर्ग में भेदभाव महानगरीय और ग्रामीण परिवेश का अंतर आदि दिखाई देता है| चालियारेछ उपन्यास प्रशासनिक व्यवस्था की भीतरी सच्चाईयों की पडताल करता है| उच्चतम प्रशासकिय व्यवस्था देश में किस तरह काम करता है, इसकी बारीक विवेचना की गई है|

इस उपन्यास के केंद्र में जो कहानी है वह दो अलाईड आई.ए.एस. अधिकारियों की कहानी है| ये अधिकारी है सुधांशु और प्रीति दोनो का प्रेमविवाह होता है| संयोग से दोनों की तैनाती भारत

Scanned with CamScanner

सरकार के प्र विभाग मे होती है| सुधांशु कथानक है| वह ईमानदार नैतिक मुल्यों का पक्षधार एक आदर्शवादी आई.ए.एस अफसर है| लेकिन वह जिस विभाग में रहता है, वही का वातावरण पूर्णत: भ्रष्टाचार से युक्त है| वह भ्रष्टाचार और रिश्वत खोरी का हिस्सा बनने से इन्कार कर देता है| चमनलाल पाल जो इस विभाग का वरिष्ठ अधिकारी हे उसे सुधांशू के, ईर्मानदारी व्यवहार परेशान हो जाता है सुधांशु के ईमानदारी के कारण उसकी छबि उस विभाग से ईमानादर-मुर्ख और अडियल अधिकारी की बन जाती है| प्र विभाग के अधिकारी कही अधिक परेशान होते है. क्योंकी ए.एफ.पी.ओ. सेक्शन को कॉन्ट्रॅक्टर्स जहां दो प्रतिशत कमीशन देते वही वह प्र.र. विभाग के अधिकारीयों को पांच प्रतिशत देते थे| चमनलाल पाल सुधांशु के विरुध्द षडयंत्र रचता है| वह सुधांशू से कुटीलता के स्वर में कहता है, च्सुधांशु व्यवस्था ऐसे नही चलती अडियल नही होना चाहिए | जो मिलता है लेते रहो, और बिल क्लियर करते रहो, वे कुछ हेरा-फेरी करते है, लेकिन ऊस और से ऑखे मूंदने मे ही भलाई है हम ब्युरोक्रेट्स की क्योकि सभी कॉट्रक्टर्स की मंत्री तक सीधी पहुंच होती है| और वे भी कौन-सा जेब से कमीशन देते है| पाच रुपये की वस्तू सरकार को पंद्रह -बीस मे सप्लाई करते हैछ[३] चमनलाल पाल के अप्रत्यक्ष संदेश को सुधांशू के समझ में आ जाता है| लेकिन वह नैतिकता का पथ नही छोडना चाहता | चाहे कुछ भी हो जाये पर वर भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी का साथ नही देगा | सुधांशु सोचता है, च्पाल क्या करेगा ... इस सीट से हटा देगा | हटा दे मै यही चाहता हूँ | रिश्वतवाली सीट पर मैं काम करना भी नही चाहता| पुरा माफियाओका गिरोह है| चपरासी से लेकर मंत्री तक | किसी ने सही कहा है, इस देश का ब्युरोक्रेट्स नेता और व्यापारी मिलकर खोखला कर रहे है| छ[४] सुधांशू की ईमानदारी और चारित्रिक उज्वलता उसके बॉस पॉलके लिए चुनौती बन जाती है| पाल ही नही रिश्वतखोर अधिकारीयों की दृष्टि में भी वह खटकता है और सुधांशू के परिणामत: विरुध्द षडयंत्र रचे जाते है| सुधांशु के मॉ को कॅन्सर होने के कारण वह गांव जाता है| अकस्मात उसे अवकाश बढाना पडता है परिणामत: पाल इस बात का लाभ उठाकर सुधांशु को नीचा दिखाने के लिए उसे कार्यालय के रिकार्ड रुम के एक कोने मे मिटाया जाता है| जहॉ चारो ओर गंदगी धुल और शोर रहता है| उसे एक पुरानी खुरदरी मेज दी जाती है| जिसपर टेबलग्लास भी नही रहता | छ किसी अफसर को अपमानित करने का नायाब ढंग उसे कोई काम न दो उसके स्वाभिमान को अधिक से अधिक आहत करो ... श्याम अंग्रेजो का क्रुरतम तरीका|छ[५]

जहां सुधांशु रिश्वतखोरी बेईमानी भ्रष्टाचार का साथ नही देता वही दुसरी ओर उसकी पत्नी प्रीति इस भ्रष्टाचार के सिस्टम में रंगने लगती है| उसका सुधांशु से कटाव होता जाता है वह अपने स्वार्थो को पुरा करने की दृष्टि से जीवन जीने लगती है| प्रीति लिए सिध्दांत नैतिकता , ईमानदारी आदि मुल्य का कोई मायने नही नही रखते उसके व्यक्तित्व में अपने पद अधिकार आदि को लेकर अहंकार भाव रहता है| जिसका वह सुधांशु को अहसास भी कराती है| प्रीति सुधांशु को कहती है, च्मुझे यह ज्ञात नही था कि वर्षो दिल्ली जैसे महानगर में रहनेवाला व्यक्ति आई.ए.एस. करनेवाला व्यक्ति आज भी गंवई-गाव की संधांशु अपने मस्तिष्क में लिए घुम रहा है| यही नही वह इतना कमजोर मुर्ख और जिद्दी है कि उसे दप्तर में नापसंद किया जाता है| उसे एक अपमानजनक जगह पर बिना काम के बैठा दिया जाता है| छ[६] प्रीति ब्युरोक्रेसी का हिस्सा बन जाती है | इस दौड में बने रहने की कोशिश मे वह अपने आपको कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी डी.पी. मीणा के साथ अनैतिक संबंध बनाती है | अहकार लोभ, और दम्भ से भरी बात बात पर सुधांशु को उसके ग्रामीण और पिछडेपन के ताने देती है| उसकी आलोचना करती है| इसतरह सुधांशू के ईमानदारी के कारण उसे भ्रष्टाचारियों के बाजार मे. पत्नी प्रीति तथा दप्तर के लोगों द्वारा प्रताडित किया जाता है| यहा पर लेखक कहना चाहता है की, चहिंदुस्तान की ब्यूरोक्रेसी की यही तो खूबी है कि वो रिश्तो के पनपने से पहले ही उसे जड से काट फेकती है|छ[७]

ईमानदारी के इस अपराध में सुधांशु को उच्च अधिकारीयो द्वारा बात-बात पर अपमानित किया जाता है| परिणामत: वह मानसिक प्रताडना का शिकार हो जाता है| घूट-घूट कर वह मृत्यु को गले लगा लेता है| सुधांशु का घूट घूट कर मरना दरअसल एक सच्चे ईमानदार आदमी की मौत हो जाती है| कथानायक का इस घुटन में मर जाना कोई सामान्य नही है| इस के माध्यम से समाज की दिशा को समझा जा सकता है| हम किस तरह के मूल्यों के हिसाब से आगे बढ रहा है| यहॉ हमे यह बात समझ में आती है कि प्रशासन में भ्रष्टाचार को जडे इतनी गहराई तक समाई हुई है कि ईमानदार , कर्तव्यनिष्ठ और उसूलो पर रहनेवाला अफसरों के लिए वहा है. नोकरी करना किसी जंग से कम नही| उन्हे मुश्किलों, अपमान अवहेलना, और घुटन के साथ जिने के लिए कितना मजबुर होना पडाता है| यह च्गलियारेछ उपन्यास के नायक सुधांशु द्वारा समझा जा सकता है| च्गलियारेछ उपन्यास की राजनीतिक दृष्टी के बारे में रिया शर्मा करती है, च्उलझनो और राजनीतिक दाव-पेचो का ताना -बाना रचते गलियारे भीतर ही भीतर कहॉ खुलते है और कहॉ पहुँच ते है बखुबी समझाने की कोशिश में लेखक पूर्ण रुप से सफल हुए हैछ[८]

Scanned with CamScanner

निष्कर्षत: कहा जाता है की, आज इस महादेश मे ईमानदारी और आदर्शवादी इंसान की कोई कद्र नही है कहने को हमारा देश लोकतंत्र है मगर लोक की हालत बदतर है तो महज इसलिए की अफसर सत्ताधीश और पुँजी पति अपनी जेबे भरने में लगे है| इनमे से एक अंग अफसरशाही के कारनामों की गहराई से पडताल कर रुपसिंह चंदेल जी ने निर्मिकता और संलग्नता के साथ अत्यंत रोचक ढंग से प्रस्तूत किया है| इलाप्रसाद इस उपन्यास पर टिप्पणी करते हुए कहती है, यह उपन्यास मात्र प्रेमकथा न होकर सरकारी तंत्र की दुरवस्था उसमे व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण कदम कदम पर चल रही राजनीति, वर्ग संघर्ष एवं परिवेशगत विसंगतियों की कथा है |

संदर्भ सुची

१) उपन्यास और राजनीति- सुधमाशर्मा - पृ. ८

२) साठोत्तर हिंदी उपन्यासों मे सामाजिक समस्याएँ- डॉ. देवनारायण शर्मा पृ. ३१

३) गलियारे - रुपसिंह चंदेल - पृ १८४

४) गलियारे - रुपसिंह चंदेल - पृ १९७

५) गलियारे - रुपसिंह चंदेल - पृ २०६

६) गलियारे - रुपसिंह चंदेल - पृ २११

७) आधारशिला पत्रिका जुन-जुलाई २०१४ पृ-५२

❑❑❑

76

इक्कीसवीं सदी में राष्ट्रीयता और हम

(गणतंत्र सिसक रहा है के विशेष संदर्भ में)

प्रा. कारभारी भटू गर्दे

शोधछात्र,

उ.म.विश्वविद्यालय, जलगाँव

जिजामाता कन्या विदयालय, धुले , तहसिल एवं जिला - धुलियाँ

****

हिंदी साहित्य संसार में व्यंग्य विधा काफी चर्चित रही है। हिंदी व्यंग्य विधा में सुधीर ओखदे द्वारा लिखित 'गणतंत्र सिसक रहा है' व्यंग्य संग्रह चर्चित रहा है। इस संग्रह में लगबग ५१ व्यंग्य कथाओं का संग्रह है। नई पिढी के व्यंग्यकार सुधीर ओखदे का यह पाचवा व्यंग्य संग्रह है। वे व्यंग्य के समीक्षक भी है।

सुधीर ओखदे लिखते है कि - "दुनिया तेजी से आगे बढ रही है और हमारी जीवनशैली के नये-नये आयाम सामने आ रहे है जो हमारे विकास के अंग है। पर इस विकास मे हम उन परम्पराओ से कटते जा रहे है जो मस्तिष्क के साथ-साथ हृदय से जुडी है और उनकी जड़े हमारी मिट्टी में समायी है। आधुनिकता के जिस पथ पर हम दौड रहे है उसमें वाहन की हमें जितनी चिन्ता है उतनी वाहक की नही तथा वाहक नहीं तथा वाहक रोटी को रोता है। वाहन पेट्रोल को नहीं। बढती महँगाई और भ्रष्टाचार से रोटी बांछी रोता है, पेट्रोल धनी नही तभी गणतंत्र कभी ठिठुरता था आज इन पचास सालो के विकास में वह सिसकने को आ गया है। तंत्र के स्वामी हम आज तंत्र के इतने गुलाम बन गये है। कि वह हमे अंदर से कही खोखला कर रहा है उसकी चकाचौध में हम नही जानते।"[१]

व्यंग्य जीवन की विविध विश्व की दृष्टि से आँखे खोलने वाला साहित्य है। व्यंग्य बदलते समाजिक परिवेश मे उत्पन्न विसंगतियों के विरुध्द लडाई का एक सार्थक आतीया बन गया है। व्यंग्य एक और प्रिय दुआ हैं। तो दूसरे और उसके खतरे बढ गए है। युवा वर्ग का हास्य व्यंग्य लेखक बिना किसी वैचारिक दृष्टि के व्यंग्य का तलवार की तरह प्रयोग करते है। व्यंग्य राजनीतिक नेताओं पर भी बडे ही वैचारिक ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए। व्यंग्य कुकर्म नहीं तो सुकर्म भी

Scanned with CamScanner